61st Kerala State School Kalolsavam - Jan 03 To 07, 2023
Kozhikode

Item Code: 948 Participant Code: 103

ज़िदगी ही नशा है

"यह ज़िदगी भी क्या ज़िदगानी है
हरी भरी रहती है सुख दुख से
तब ही बोलते हैं ज़िदगी ही नशा है"

ज़िदगी ही नशा है। यह एक बड़ी सच्ची प्रस्ताव है। ऐसे इसलिए बोला जाता है क्यों कि ज़िदगी मे ऐसे बहुत सारे सुख-दुख आती और जाती रहती है। ज़िदगी की हर एक कठिन समय को सामना करके जीना सीखना चाहिए। जो उस कठिन को करके जीते हैं या जीने की कोशिश करते हैं वही पे ही बोल सकते हैं कि वह इंसान कि ज़िदगी ही नशा है!

हमारे भारत की ओर देखा जाए तो मनुष्य लोग ज़िदगी से तो इतना नशा नहीं करते है। मैं ये मानती हूँ कि जो ज़िदगी की हर एक मुसीबत और कठिनाई को सामना करके आगे बढ़ते है उन्ही लोगों को ही ज़िदगी से नशा रहती है। आज कल हर एक लोग अपने अपने ज़िदगी को इतना तुच्छ समझ लिए हैं कि एक मिनट भी नहीं लगाती है अपनी ज़िदगी ही बरबाद कर डालते हैं। इस प्रस्ताव हम लोग यह समझ सकते हैं कि

भारत मे ऐसे बहुत सारे लोग है जो अपनी ज़िदगी को अहम नही देते है। हम आज कल रोज़ाना पढते हैं बालिका या बालक ने अपनी जान देदी या खुद खुशी कर ली। यह सब सबसे बडी लापरवाही है। खुदखुशी करने के बजाए वह बालिका या बालक जो मुसीबत झेल रही थी उसे निडर होके सामना करती तो शायद हम कह सकते थे की ज़िदगी ही नशा है। सबसे ज्यादा तो पढे लिखे लोग ही ऐसे करते है। अगर हम गाँव की तरफ मुडकर देखे तो हमें पता चलेगा की वह लोग ज़िदगी से कितना नशा करते है। और जीने के लिए नशा करते है। हर एक मुसीबत को सामना करके आगे बढते है वही लोग असल मे करते है नशा और उनकी ही ज़िदगी ही नशा है। वैसे एक इंसान को मे बहुत सी तरह की नशा रहती है। जैसे की,

i) खूब सारा पैसा कमाना
ii) बडा घर बनाना
iii) अपना समूह के लिए कुछ करना या अपने भारत के लिए
iv) अच्छी शिक्षा पाना

आदि सब एक आम आदमी का ज़िदगी का नशा है! ये सारी नशायें है अच्छी पर ऐसे भी नशायें है जो ज़िदगी को ही मार डाल देता है। जैसे कहते है न कि एक तलवार को दो धार होता है वैसे ही। कोई व्यक्ती मानसिक रूप से बीमार हो, ज़िदगी से परेशान

हो उनकी नशा ये होता है कि कब अपनी जान दे दूँ !

भारत की सबसे गरीब जगह कौन सा है ? पूछा जाए तो बेशक बिहार है। वैसे बिहार भारत में सबसे गरीब जगह है लेकिन जब उनकी ज़िंदगी और देखा जाए तो नशा ही नशा है। उन लोगों की जीने की नशा देखेंगे तो कहेंगे उन लोगों को जीने का कितना तलब है। जो जीने के खातिर इतनी बड़ी बड़ी मुसीबत को सामना करके जीना चाहते हैं। वैसे तो ज़्यादा तर लोग अनपढ़ रहते हैं लेकिन उन्हें पता है कि भले ही ज़िंदगी में क्यों न कोई भी मुसीबत आए उसे सामना करके जीना चाहते हैं। वैसे बीहार पहले बहुत बड़ा था और अमीर भी पर जब लोकमहायुद्ध हुआ और ओडीशा, झारखंड बंगाल अलग हो गया तब से ऐसे हालात हुई है। इसलिए बिहार आज गरीब है। और आज तक ऐसा एक भी इंसान नहीं राजनीती में आया है जो बिहार का हालात बदल सकता है। फिर भी आज बिहार कि लोगो की ज़िंदगी ही नशा है। और वह इस विषय पर आगे है।

और जब केरल में देखा जाए तो शिक्षा पाने में और अमीर रहने में भी आगे है लेकिन यहाँ की "लोगों की जिंदगी ही नशा है" बोलना थोड़ा मुशकिल है। क्योंकि एक छोटा सा समस्या हो उसे कैसे सामना करें बिना सोच समझे बुरी तरह की नशा में मगन हो जाते हैं। जैसे की आज कल हर तरफ बात-

चल रही है "ड्रगस", सारे लोग इस चीज़ों से नशा करते हैं। सोचते हैं लोग कि यही एक दवा है जिंदगी को सुधारने के लिए, लेकिन नहीं। ऐसे वह करते हैं जो बेवकूफ लोग करते हैं। ऐसे करने से ज़िंदगी अंधकार में चली जाती है। हमारी भारत की बापूजी श्री. महात्मा गाँधी जी ने कहा है कि अपने भारत को अनपढ़ रहते हुए देख सकता हूँ लेकिन नशा से भरा हुआ नहीं। तो नशा करना है तो कीजिए पर संभल के अपनी ज़िंदगी को करनेवाली नहीं। अपनी ज़िंदगी को बनाने वाली नशा कीजिए।

* पहले ज़माने लोगों का नशा और आजकल लोगों का नशा:

पहले ज़माने लोगों का नशा का बारे में बात किया जाए तो वह हमेशा इसीसे ही नशा करते थे कि कैसे जिंदगी को आगे बढ़ाएँ और अपना मुसीबत को कैसे दूर करें। पर आज कल की लोगों को देखें तो मोबाइल फोन, सोशयल मीडीया, ड्रगस इन चीज़ों का नशा करते हैं। ऐसे करने से केवल अपनी ज़िंदगी नहीं बल्की एक समूह पूरा बरबाद होना ता है। पहले ज़माने हर एक लोग इतना निर्भर रहते थे और सिर्फ जिंदगी से ही नशा करते थे। पर आज कल की लोग देखा जाए तो हर वक्त सोसयल

पे मौजूद रहते हैं। वैसे तो सोशयल मिडिया अच्छी है संवाद करने के लिए लेकिन कहते हैं न कि एक तलवार को दो धार होता है वैसे इसे भी दो धार है मतलब अच्छी उपयोग भी है और बुरा उपयोग है। अच्छी उपयोग के बुर पीछे चलना चाहिए उसके बजाए बुरा का साथ देने लगते हैं और बुरी चीज़ों से नशा करने लगते हैं। और आज कल की लोगों की सबसे बड़ी समस्या ड्रग्स है आज कल की हर एक नौजवान नशा की लत मे पड़ जा रहे हैं। वैसे नही होना चाहिए। जैसे कि आप सब को पता है कि नशा का लत लगाना मानो मकड़े की जाल मे फसना जैसा होता है। पर मकड़ा का जाल इतनी नाज़ुक रहती है कि पल भर मे टूट जाती है। पर यह नशा का जाल वैसा नही है जब आप एक बार फंस जाता है निकल नामुंकिन हो जाता है। वैसे इसे दूर करने के लिए बहुत सारे तरीके रहते हैं। जैसे कि रिहाबिलिटेशन सेंटर, दवाइयाँ यह सब की मदद से नशा की लत खतम कर सकते हैं। तो आज कल की लोगों को इसी तरह की नशाये हैं। बिलकुल भी यह नही कह सकते हैं कि ज़िंदगी ही उनकी नशा है। पुराने ज़माने की हर एक लोग सिर्फ अपने जिंदगी के बारे मे सोचते थे।

61st Kerala State School Kalolsavam - Jan 03 To 07, 2023
Kozhikode

Item Code: 948 Participant Code: 103.

वैसे पहले ज़माने की लोगों में और आज कल की लोगों में बहुत सारी फर्क क है। उन लोगों की नशा क्या था और आज कल की लोगों का नशा क्या है। आज कल की लोगों की ज़िदगी की नशा से है एक सोशल मिडिया श्री· नरेंद्र मोदी जी उन्होंने कहा है कि सोशल मिडीया संवाद को लोकतांत्रिक बनाने महान भूमिका निभाई है, यह तो एक अच्छी कथन है लेकिन बहुत सारी बुराइयों भी है।

ज़िदगी ही नशा है, ज़िदगी से प्यार कीजिए, मुसीबतों का हल निकालिये पहले ज़मानों की तरह, और ज़िदगी जिये, तभी हम लोग कह पायेंगे ज़िदगी ही नशा है।

(**Note**: Graded Items may be published in **Schoolwki.** So write neatly. Don't fold paper. Don't write overleaf)